ARTICLE

ADVANCE RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE
| December, 2011 | Volume 2 | Issue 2 | 283-285

भारतीय साहित्य में हिन्दी एवं मलयालम भाषा में पहेलियों का महत्व

■प्रिया जी. एवं के0जी0 प्रभाकरन

KEW WORDS : प्राकृत, अपभ्रंश, पिंगल, अवधी, ब्रजभाषा

How to cite this Article: G., Priya and Prabhakaran, K.G. (2011).Bhartiya Sahitya Mae Hindi Avam Malayalam Bhasha Mae Paheliyaon ka Mahatav, *Adv. Res. J. Soc. Sci.*, **2** (2) : 283-285.

Article chronicle : Received :*03.11.2011;* **Accepted** : *29.11.2011*

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। समस्त उत्तर भारत एवं मध्य भारत के अधिकांष प्रान्तों की भाषा हिन्दी है। हिन्दी भारत की सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि भाषा है। प्राकृत, अपभ्रंष, डिंगल, पिंगल, अवधी, ब्रजभाषा से होती हुई खड़ी बोली तक की विकास यात्रा में हिन्दी भारतीय इतिहास, साहित्य एवं संस्कृति की प्रतिनिधि भाषा रही है। हिन्दी के मौखिक साहित्य में पहेली साहित्य का विषेष महत्व है।

मलयालम सुदूर दक्षिण की भाषा है। द्रविड़ भाषा परिवार से उत्पन्न मलयालम दक्षिण की अन्य भाषाओं की अपेक्षा संस्कृत भाषा के अधिक निकट है। संस्कृत के शब्द प्रभूत मात्रा में मलयालम में पाये जाते हैं। हिन्दी में जैसे तत्सम एवं तद्भव शब्दों का भंडार है वैसे ही मलयालम में भी है। हिन्दी के समान मलयालम के मौखिक साहित्य में पहेलियों का अपना महत्व है।

वैदिक काल में अष्व की बलि के पूर्व ब्राह्मण ब्रह्मोदय पूछते थे। आनुष्ठानिक प्रयोग के सन्दर्भ में ब्रह्मोदय पहेली का आदि रूप माना जाता है। पहेली के गूढ़ार्थ व्यंजक स्वरूप के कारण संस्कृत में इसे 'प्रहेलिका' कहते हैं। हिन्दी में पहेली के लिए प्रयुक्त दूसरा शब्द 'बुझौअल' है। अंग्रेजी में इसे 'RIDDLE' कहते हैं। कथन के मूल में निहित रहस्य के कारण इसे 'ENIGMA' भी कहा जाता है। मलयालम में पहेली के लिए प्रयुक्त शब्द 'कटंकथा' है।

पहेली का स्वरूप विष्लेषण अपेक्षित है। पहेली मौखिक साहित्य की एक विधा है। लोकगीत, लोक कथा, वीर गाथा, लोकोक्ति और लोक नाट्य के समान पहेली भी लोक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। परंपरावाद, सामूहिक प्रज्ञा, अनामत्व, सहजता, सरलता एवं सद्भाव लोक साहित्य के प्रमुख तत्व हैं। वैदिक काल से लेकर आज तक पहेली की परंपरा अक्षुण्ण है। यह लोक साहित्य का अजस्र स्रोत है। महाभारत और जातक कथाओं में पहेली का प्राक् रूप विद्यमान है।

पहेली का संबंध लोक जीवन एवं संस्कृति से है। लोक संस्कृति का गहरा प्रभाव पहेली में दृष्टिगत होता है। मानव के गोत्रीय जीवन में कृषक सभ्यता के भीतर ही पहेली का सर्वाधिक विकास हुआ माना जाता है। ग्रामीण जीवन में ही पहेली बुझाने का शौक रहता था। दादी बच्चों को जैसे कहानियाँ सुनाती थीं वैसे पहेली भी बुझाती थीं। बच्चों को सुलाने का यह भी एक उपाय रहा होगा। बड़ों के बीच जब पहेली बुझाने का विनोद चलता था तब सुलझाने वाले को सही उत्तर नहीं मिलता तो उसे हार माननी पड़ती थी और 'कंट' कहना पड़ता था। सुलझाने वाले के 'कंट' कहने पर पहेली बुझाने वाला सही उत्तर सुनाता था। पहेली में कथा का चमत्कार रहने से उसे 'कंटकथा' कहा जाता था।

विवेच्य साहित्य का सर्वेक्षण :

पहेली मौखिक साहित्य विधा है। यह जनता की जिàा पर जीवित रहती आयी है। सभ्यता के विकास क्रम में पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी लोक संस्कृति की इस महान धरोहर का

Author for correspondence:
प्रिया जी., शोधार्थिनी, विनायिका मिशन विश्वविद्यालय, सलेम (तमिलनाडु) भारत

Address for the coopted Authors:
के0जी0 प्रभाकरन, शोधार्थिनी, विनायिका मिशन विश्वविद्यालय, सलेम (तमिलनाडु) भारत

संरक्षण–पोषण करती आयी है। परम्परा से प्रचलित पहेलियों के संग्रह समय–समय पर प्रकाषित होते रहे हैं। खड़ी बोली हिन्दी में पहले पहल अमीर खुसरो (बारहवीं सदी ई॰) की पहेलियाँ लिखित मिलती हैं। साधारण जनता की बोलचाल में जिस ढंग की तुकबन्दियाँ और पहेलियाँ उन्हें प्रचलित मिलीं उसी ढंग की तुकबन्दियाँ और पहेलियाँ उन्होंने लिखीं। अमीर खुसरो जिसे डॉ0 ईष्वरी प्रसाद ने कवियों का राजकुमार (The prince among poets) कहा था, की पहेलियाँ और मुकरियाँ प्रसिद्ध हैं। उन्होंने पहेलियों के ढ़र्रे पर दोसखुने भी लिखे। इनके द्वारा अमीर खुसरो ने कौतूहल एवं विनोद की सृष्टि की। सचमुच यह मनोरंजन की सामग्री है। डॉ0 रामकुमार वर्मा ने अमीर खुसरों की पहेलियों के छः प्रकार बताये हैं : (अ) अन्तर्लापिका (आ) बहिर्लापिका (इ) मुकरी (ई) दो सखुना (उ) बराबरी का सम्बन्ध (ऊ) ढकोसला।

(हिन्दी साहित्य का आलोचना इतिहास – पृ0 130)

दो पहेलियाँ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत हैं :

– एक थाल मोती से भरा। सबके सिर पर ओंधा धरा। चारों ओर वह थाली फिरे। मोती उससे एक न गिरे (आकाष)

– एक नार ने अचरज किया। सौंप मारि पिंजड़े में दिया।
जों जों साँप ताल को खाए। सूखे ताल साँप मर जाए। (दिया बत्ती)

अमीर खुसरो के बाद किसी रचनाकार का पहेली संग्रह हमें प्राप्त नहीं हुआ है। हाँ, मौखिक पहेलियों के संग्रह तो प्रकाषित मिलते हैं।

मलयालम में भी पहेलियों के संग्रह निकले हैं। अवन्ति प्रकाषन का 'कटुंकथकल्' मलयालम की पहेलियों का संग्रह है। 'फोकलॉर डिक्षनरी' में डॉ0 एम0बी00 विष्णु नंपूतिरि ने मलयालम पहेलियों का विवेचन किया है। विषय के आधार पर उन्होंने पहेलियों को प्रकृतिपरक, कृषि सभ्यता से सम्बन्धित, पारिवारिक परिवेष से सम्बन्धित आदि शीर्षको में रखा है। स्वरूप एवं प्रभाव के आधार पर पहेलियाँ के विवरणात्मक (Descriptive) fouksnijd (joking question) ज्ञानात्मक गूढार्थ निरूपक (Puzzles) हास्यात्मक (Parady riddles) आदि भेद भी किये गये हैं। (फॉकलॉर डिक्षनरी)

दो मलयालम पहेलियाँ प्रस्तुत हैं :

– फूला हुआ पेड जिसकी जड नहीं, तना नहीं, पत्ता नहीं (आकाष)
(वेरिल्ला, तटियिल्ला, इलयिल्ला पूमरम्)

– मेड़ पर बैठे पूँछ से पानी पिया (दिया)
(वरम्पत्तिरुन्न वालुकोण्टु वेल्लं कुटिच्चु–निलविलक्कु)

अध्ययन की अपेक्षा (Need for Study):

पहेली ग्रामीण जीवन एवं संस्कृति की धरोहर है। ग्रामीण जन की सहज बुद्धि, भावना, अनुभव, कल्पना, विनोदप्रियता एवं वाक्पटुता के साथ उनकी जिजीविषा तथा प्रकृति प्रेम पहेली में अभिव्यक्त हैं। पहेली की संस्कृति की धरोहर समझकर जनता उसे अपनी स्मृति एवं जिàा पर सुरक्षित रखती आयी है। लेकिन नव उपनिवेषन, भूमंडलीकरण एवं उदारीकरण के कारण भारत में एक उपसंस्कृति जड़ जमा रही है। अपना स्वत्व, अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति हीन भावना से प्रेरित भारत का षिक्षित मध्यवर्ग पष्चिमी सभ्यता का अंधा अनुकरण कर रहा है। अंग्रेजी के मोहजाल में पड़कर हिन्दी एवं प्रान्तीय भाषाओं के प्रति घोर उपेक्षा बरती जा रही है। लोक संस्कृति एवं लोकसाहित्य उपेक्षित हो रहे हैं।

अपसंस्कृति के इस दोर में लोक साहित्य की ओर जनता को आकृष्ट कर अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति उन्हें सचेत करना है। पहेली जो लोक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है, का अध्ययन इस दिषा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion):

हिन्दी और मलयालम साहित्य की पहेलियों का यह तुलनात्मक अध्ययन भाषा, साहित्य एवं संस्कृति की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पहेली लोक साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। लोकगीत, लोक कथा वीर गीत और लोक नाट्य के समान पहेली भी जीवन और लोक संस्कृति का जीवंत दस्तावेज है। पहेली मौखिक वाङमय विधा है जो सदियों से जनता की स्मृति एवं जिàवा पर जीवित रहती आयी है। किसी देष या प्रान्त को जनता के आचार–विचार, रीति–रिवाज, खान पान और वेषभूषा के साथ उनकी जीवन–दृष्टि, बौद्धिक विकास, भावात्मक गरिमा, कल्पना वैभव, मनोरंजन तथा विनोदप्रियता की सच्ची अभिव्यक्ति उनकी भाषा की पहेली में ही पायी जाती है। विविधता में निहित एकता भारतीय संस्कृति का प्राणतत्व है। हिन्दी और मलयालम की पहेलियों का यह तुलनात्मक अध्ययन भारत की भावात्मक एकता को पुष्ट करने वाला सिद्ध होगा।

अपसंस्कृति के समकाल में भारतीय जनता स्वत्व लोप एवं संस्कृति के क्षरण के दौर से गुजर रही है। मलयालम साहित्य की पहेलियों का यह तुलनात्मक अध्ययन लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति के प्रति जनता की रुचि बढ़ाते हुए उनके स्वत्व लोप एवं सांस्कृतिक क्षरण के विरुद्ध प्रतिरोध खड़ा करने में कारगर सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची (Bibliography)

हिन्दी

1. धीरेन्द्र वर्मा (1963). हिन्दी साहित्य कोष भाग–1, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
2. रामकुमार वर्मा (1971). हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, राम नारायण लाल बेनीमाधव, इलाहाबाद।
3. रामचन्द्र शुक्ल (1999). हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

मलयालम

1. जॉस जोर्ज (2004). कटंकथकल्, अवन्ति पब्लिषेर्स, कोट्टयम।
2. एम0 वी0 विष्णु (1989). नंपूतिरि, फॉकलोर निघंटु, केरल भाषा इंस्टिटयूट, तिरुवनंतपुरम्।

English

1. Allan Bullock (1989). The Fontana Dictionary of Modern Thought, Fontana Paper Back London.
2. Durga Bhagwat (1965). The Riddle in Indian Life, Lore and Literature, Popular Prakasan, Bombay.
3. Ishwari Prasad (1933). History of Mediaeval India.
4. Shyam Parmar (1981). Folklore or Madhya Pradesh, National Book Trust, India, New Delhi.
5. Sir James Frazer (1954). The Golden Bough (Abridged Edition) Macmillan.